“कोई मुझे प्यार नहीं करता. मैं घर छोड़कर जा रहा हूँ ....”

पिछले दिनों राजस्थान के कोटा शहर की जीएसटी विभाग की उपायुक्त (डेपुटी कमिश्नर) के १० साल के बेटे का घर छोड़ कर चले जाना राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सुर्खियाँ तो नहीं बना, किन्तु इस खबर ने हर एक छोटे बच्चे के अभिभावक को सोचने पर ज़रूर मजबूर कर दिया। एक बच्चा किस नज़रिए से सोचता है और किस प्रकार का व्यवहार करता है, इस घटना ने सबको सोचने पर ज़रूर विवश कर दिया। आगे बढ़ने से पहले, आइये जानते हैं कि आखिर हुआ क्या था –

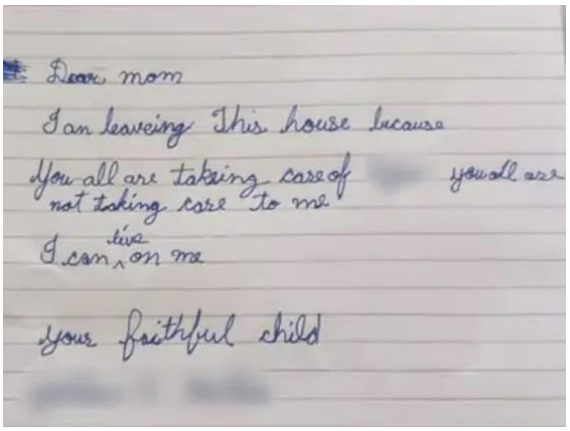

३० अक्तूबर की शाम को जीएसटी विभाग की उपायुक्त रेणुका शर्मा ऑफिस से घर आई तो बच्चे को घर में ना पाकर चिंतित हुई। बिस्तर के सिरहाने एक चिट्ठी पड़ी थी, जिस पर लिखा था कि “मम्मी आप छोटे भाई को ज्यादा प्यार करती हो, मुझे नहीं। इसलिए मैं घर छोड़ कर जा रहा हूँ। मैं अपना ध्यान खुद रख सकता हूँ।” बच्चा सुबह १०बजे ये चिट्ठी लिख कर निकल चुका था। तत्काल अभय कमांड सेंटर और स्थानीय पुलिस सक्रिय हुई और तकरीबन १२ घंटे बाद बच्चा मध्यप्रदेश के रतलाम रेलवे स्टेशन पर मुंबई जाने वाली ट्रेन में बैठा मिल गया। पुलिस उसको लेकर तत्काल कोटा रवाना हुई। बच्चा पूरे रास्ते गुमसुम रहा और माँ को देखते ही उस से लिपट गया।

रेणुका शर्मा के अनुसार उनके दो बच्चे हैं और सुबह-सुबह दोनों आपस में झगड़ पड़े थे। उन्होंने बड़े बच्चे की गलती मानते हुए उसे डांट लगा दी थी। उसी से आहत होकर शायद बच्चे ने यह कदम उठा लिया होगा।

धारा- धारा, शुद्ध धारा

बचपन में हम सभी ने एक तेल कंपनी का विज्ञापन तो देखा ही होगा, जिसमें बच्चा नाराज़ होकर रेलवे स्टेशन पर बैठा है और साथ वाले बुज़ुर्ग को मासूमियत से कहता है कि वह घर छोड़कर जा रहा है क्योंकि कोई उसे प्यार नहीं करता। वह बुज़ुर्ग उसे “घर पर जलेबी बनाई है” कहता है तो “जलेबी” के लालच में बच्चा घर छोड़कर जाना केंसिल कर देता है। वो मासूमियत भरा विज्ञापन बच्चे की अच्छी और बुरी; दोनों मनोदशाओं को बखूबी बताता है।

परवरिश

यह हर माता पिता के लिए सच है कि वे अपने बच्चों से प्यार करते हैं, लेकिन कई बार उनका प्यार कम पड़ जाता है। अधिकांश अभिभावक अपने बच्चों के साथ समान रूप से व्यवहार करने की कोशिश करते हैं। लेकिन कभी-कभी दो बातें समान नहीं होती हैं। एक मां जिसका छोटा बेटा किसी काम को करने में बड़े बेटे से ज्यादा समय लेता है तो उस कार्य की आवश्यकता होने पर उस मां का झुकाव बड़े बेटे की ओर रहेगा। इससे दूसरे बच्चे में हीन भावना आ सकती है। जब माता-पिता अपने दो बच्चों के साथ किए जाने वाले फर्क को लेकर करने बात करने में विफल हो जाते हैं, तो उन्हें परेशानी हो सकती है। कोटा मेडिकल कॉलेज के

वरिष्ठ प्रोफ़ेसर डॉ. सी.एस. सुशील के अनुसार अगर बच्चा ये समझ रहा है कि उसके और उसके बड़े या छोटे भाई के बीच भेद हो रहा है तो इसके तत्कालीन और दीर्घ परिणाम बहुत भयावह हो सकते हैं। बच्चे उदासीन हो जाते है, डिप्रेशन का शिकार हो जाते हैं और कई बार उन्हें लगता है कि ऐसे परिवार में रहने की कोई ज़रूरत ही नहीं है और वे गलत कदम उठा लेते हैं। दीर्घकालीन परिणामों में कई बार उनका व्यवहार अपने छोटे भाई- बहिन के प्रति हमेशा के लिए रुखा या गुस्सेल हो सकता है।

छोटा बनाम बड़ा

मनोवैज्ञानिक डॉ. अरुणा ब्रोटा, जो हाइपोथेरेपिस्ट हैं, बताती हैं, 'भारतीय समाज में हम बड़े बच्चे पर अधिक दबाव डालते हैं। बड़े को अधिक जिम्मेदारियां दी जाती है और छोटे का, छोटा होने के कारण घर से अलगाव हो जाता है। इसे बदलने की जरूरत है। कभी भी अपने बड़े बच्चे से छोटे के लिए समझौता करने के लिए न कहें। इससे बाद में, इन भाई-बहनों के बीच मनमुटाव हो सकता है और बदतर स्थिति पैदा हो सकती है।' यह जिस तरह से 'अनजाने में' उपेक्षित किए जाते हैं इससे उपेक्षित बच्चा अपना एक अलग स्वभाव विकसित करता है जिससे मनमुटाव और विवाद हो सकता है।

बच्चों को प्यार की जरूरत होती है और अगर उन्हें यह नहीं मिलता है तो उन्हें भावनात्मक रूप से चोट पहुंचती है। डॉ. गौरव देका (मनोचिकित्सक) कहते हैं, 'यह समझा जाना चाहिए कि कोई भी परिवार पूरी तरह से सही नहीं हो सकता। कई बार अच्छे माता-पिता भी असंतोषपूर्ण व्यवहार करते हैं जिससे उनके बच्चे को मानसिक रूप से नुकसान हो सकता है। मजे की बात यह है कि ये माता-पिता अपने बच्चों के प्रति उनके द्वारा उपयोग किए जाने वाले गलत शब्द व्यवहार को अपनी गलती नहीं मानते हैं और आश्वस्त रहते हैं कि वे उनका सर्वोत्तम चाहते हैं।'

□□□□ □□□□- □ □□□□□□□ □□□□□□□□□

लड़का बनाम लड़की

कविता मुंगी, मानसिक स्वास्थ्य परामर्शदाता, जिनके पास बच्चों और उनके माता-पिता को परामर्श देने का दो दशकों से अधिक का अनुभव हैं, बताती हैं कि लिंग आधारित भेदभाव हमारे दिमाग में पहले से बसा है। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि मुझे माता-पिता के सामाजिक स्तर के ऐसे मामले देखने को मिलते हैं, जो अनजाने में बेटों पर अपनी बेटियों से ज्यादा तरजीह भरा व्यवहार करते हैं। जैसे-जैसे लड़कियां बड़ी होती हैं, वे इस भेदभाव को समझती हैं और इससे वह मानसिक और भावनात्मक रूप से प्रभावित होती है।'

क्या लिंग वास्तव में माता-पिता द्वारा अपने बच्चों के साथ होने वाले व्यवहार को प्रभावित करता है? 'लिंग संबंधित मानसिकताएं ऐसी होती हैं कि हमेशा एक लड़की को कहा जाता है कि उसे खुद कैसे व्यवहार करना चाहिए, अजनबियों से सावधान रहना चाहिए, बहुत देर तक बाहर नहीं रहना चाहिए, अकेले बाहर नहीं जाना चाहिए, लेकिन लड़के को उन्हीं चीजों की आजादी दी जाती है। माता-पिता यह भूल जाते हैं कि उन्हें अपने बेटों को यह सिखाना चाहिए कि किसी स्त्री का सम्मान कैसे करते हैं। वे बताती हैं कि बेटे को अधिक संवेदनशील बनाया जाना चाहिए और उन्हें ऐसी तालीम कम उम्र से ही दी जानी चाहिए।'

जब इस तरह के भेदभाव लड़कों और लड़कियों के साथ किए जाते हैं, तो वे भेदभाव के व्यवहार को और माता-पिता के साथ उनके रिश्तों को समझना शुरू करते हैं और यहां तक कि इससे भाई-बहन भी प्रभावित होते हैं। इससे ईर्ष्या हो सकती है उपेक्षित बच्चा और अधिक गहराई से असुरक्षा महसूस कर सकता है। डॉ. देका कहते हैं, 'ऐसे बच्चों में निष्क्रिय आक्रामक व्यवहार, गैर-

मौखिक आक्रामकता का एक रूप दिखा सकता है जो नकारात्मक व्यवहार में प्रकट होता है। वे अपने चेहरे पर यह नहीं दिखा सकते हैं कि वे गुस्से में हैं लेकिन वे मन ही मन सोचते रहते हैं। इससे बच्चों के हानिकारक व्यवहार रूप सामने आ सकते हैं।"

चलते चलते,

चिकित्सकों से बात करते समय और इस आलेख को लिखते समय मेरे मन में वे तमाम यादें उभर कर सामने आने लगी, जब जब लगा कि शायद हर परिवार में जाने अनजाने में अभिभावक दो बच्चों में भेदभाव या तुलना करने से नहीं चुकते। मैंने अपने संयुक्त परिवार में ऐसा होते कई बार देखा है। बड़े बुज़ुर्ग कई बार ऐसी बातें बोल देते हैं, जो उनके अनुसार तो सीख है किन्तु बच्चों के लिए वो किसी ताने से कम नहीं होती। ऐसे में बदलने की ज़रूरत घर के वयस्कों की हैं।

अच्छे संबंधों की कमी, पर्याप्त ध्यान न देना और माता-पिता का अपने बच्चों के साथ न जुड़ना, ये सभी चीजें बच्चे के व्यवहारात्मक और भावनात्मक समस्याओं के बढ़ते जोखिम के साथ जुड़ा है। ये बच्चों पर लंबे-समय तक असर करता है और मस्तिष्क के विकास को भी प्रभावित करता है। इसका एक ही उपाय है कि बच्चे की मनोदशा देखकर उसे प्यार करें। अगर घर में एक से ज्यादा बच्चे हैं तो सभी को एक जैसा प्यार- व्यवहार करें। उन्हें छोटा और बड़ा कहकर व्यवहार में बदलाव नहीं लायें। बच्चों का लालन- पालन एक जैसा करें। एक जैसी स्कूल में पढाएं। कई बार अभिभावकों की गलती बहुत ज्यादा नहीं होती। पहले बच्चे को सब प्यार करते हैं,लेकिन जब दूसरा बच्चा पैदा होता है तो माता-पिता का ध्यान दूसरे बच्चे पर केन्द्रित हो जाता है। ऐसे में खास ख्याल रखें कि कहीं बड़ा बच्चा गलती से भी उपेक्षित तो नहीं हो रहा !

अभिभावक हमेशा ख्याल रखें- बच्चों को बोला गया हर शब्द, बच्चों के गाल पर किया गया हर चुम्बन, उनको गले लगाकर दी गयी हर "झप्पी", उनके साथ खेला गया हर खेल आपके बच्चे को हर तरह से आगे बढ़ने में मदद करता है।

(लेख: ओम, आरंभिक बाल विकास विशेषज्ञ, अर्बन95, इकली साउथ एशिया- उदयपुर टीम)